Daily Gospel Reflections in Hindi

01 October 2019

मत्ति 18 : 1 - 5

Be like a child

संत मत्ती के सुसमाचार अध्याय 18 में हम प्रभु की नई आज्ञा के बारे में पढ़ते हैं। पुराने विधान में मूसा के नियमों को पांच भागों में बांटा गया है । उसी तरह संत मत्ती नई आज्ञा को पांच भागों में बांटते हैं । पहला आशीर्वचन, दूसरा मिशन का बारे में प्रचार, तीसरा दृष्टांतो के द्वारा प्रचार, चौथा समुदाय के बारे में प्रवचन और पांचवा स्वर्ग राज्य के बारे में प्रवचन। इनके जरिए प्रभु ने किस तरह इस नई विधान को अपने जीवन में लागू किया है, वे बताते हैं । शिष्य ईसा से प्रश्न करते हैं कि स्वर्ग राज्य में सबसे बड़ा कौन है? ईसा उन्हें उत्तर देते हैं यदि तुम फिर छोटे बालकों के जैसे नहीं बनोगे तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे । यहां छोटे बालकों का आशय केवल बच्चों से ही नहीं लेकिन गरीब एवं समुदाय के तिरस्कृत लोगों से भी हैं। ईसा के समय समाज में गरीब बच्चों और विधवाओं की कोई जगह नहीं थी । संत मत्ती के अध्याय 18 वाक्य 14 में कहते हैं कि मेरा स्वर्गीय पिता नहीं चाहता कि उन नन्हों में से एक भी खो जाए। ईसा यह चाहते हैं कि शिष्य गण सभी लोगों को साथ लेकर चलें । अगर कोई भी व्यक्ति नन्हों की मदद करता है तो उनके समान निष्कलंक बनता है तभी वह समुदाय में शामिल होगा । आज माता कलीसिया संत टेरेसा का त्यौहार मनाती है उनकी जीवनी समय पता चलता है उनके जीवन का आरंभ उतना सुखद नहीं था बचपन में ही मां की मृत्यु हो गई थी इसलिए उन्होंने घर की जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर उठाया। कच्ची उम्र में ही वह प्रभु की शिष्य (धर्म बहन) बनना चाहती थी । वे कभी अपने कान्वेंट की चार दीवारों के बाहर नहीं निकली । उस कान्वेंट में रहते हुए उन्होंने सभी मिशनरियों के लिए प्रार्थना की। उन की प्रार्थनाओं के कारण उन्हें मिशनरियों की संरक्षिका संत मानती है । हमारे धर्म प्रांत की स्वर्गीय मध्यस्थ से हम निवेदन करें कि हमारे मिशन कार्यों को भी वे सफलता प्रदान करें।

Rev. Fr. Alex Pulickaparambil

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019